Ch-2 अहिंसा के दूत

1. गांधी जी के बचपन का क्या नाम था?
उ- गांधीजी के बचपन का नाम मोहन था और सब प्यार से उन्हें मोनिया बुलाते थे।
2. गांधीजी के माता और पिता के क्या नाम थे?
उ- गांधीजी के माता का नाम पुतलीबाई और पिता का नाम करमचंद्र गांधी था।
3. मोहन को क्या करने का शौक था?
उ- मोहन को पेड़ों पर चढ़ने का शौक था।
4. पिताजी को क्या लगता था?
उ- पिताजी को यह लगता था की-मोहन छोटा लड़का है कहीं पेड़ से गिरकर चोट न लगजाए इसलिए उन्हे डर लगता था।
5. मोहन नजर बचाकर क्या किया?
उ- मोहन नजर बचाकर पेड़ों पर चढ़कर पेड़ों की टहनियों पर उछल-कूद किया।
6. मोहन कहाँ उछल-कूद कर रहा था?
उ- मोहन पेड़ों की टहनियों पर उछल-कूद कर रहा था।
7. कौन खिड़की से देख लिए?
उ- मोहन के बड़े भाई ने उन्हें खिड़की से पेड़ पर चढ़ते देख लिए।
8. पेड़ पर कौन चढ़ रहा था और क्यों?
उ- पेड़ पर मोहन चढ़ रहा था क्योंकि पेड़ पर चढ़कर टहनियों पर उछल-कूद करना और हवा का आनंद लेना उन्हे अच्छा लगता था।
9. गांधीजी के जीवन से आपने क्या-क्या सीखा?
उ- गांधीजी के जीवनी से हमें यह सीख मिली की हिंसा का बदला, हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा से भी लिया जा सकता है। सदा सच्चाई का साथ दो किसी के बहकावे में न आओ। छोटे-बड़े सबका आदर और सम्मान करो। बड़ों का कहना मानना चाहिए। अपने से छोटा किसी को न समझो। हमें कभी भी क्रोध नहीं करना चाहिए। क्रोध को प्रेम से भी जिता जा सकता है। हमें मिथ्या भाषण से दूर रहना

चाहिए। अपनी बातों को रखो अगर इसमें सच्चाई और दम है तो। किसी भी बात को समझा के शांतिपूर्वक ढंग से खत्म करो न की अहिंसा से। सबके साथ मानवीय व्यवहार करना चाहिए। सत्य अहिंसा मानवता को अपनाओ। गांधीजी के तरह हमें अपने मन, वचन और कर्म से जीवन भर "अहिंसा" के सिद्धांत का पालन करना चाहिए।

प्र- लिंग बदलिए-

10. पिता - माता
11. भाई - बहन
12. बालक - बालिका
13. बेटा - बेटी

14. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर सही वाक्य के सामने सही तथा गलत वाक्य के सामने गलत का निशान लगाइए।

(क) हमें संसार के सभी प्राणियों से प्रेम करनी चाहिए। ✓
(ख) मोहन के पिता जी उन्हें पेड़ पर चढ़ने के लिए बार-बार कहते। ✗
(ग) बालक मोहन पिताजी के सामने पेड़ पर चढ़ जाया करते थे। ✗
(घ) बड़े भाई ने कमरे की खिड़की से उन्हें पेड़ पर चढ़ते देख लिया। ✓
(ङ) जमीन पर गिरने से मोहन को अधिक चोट लगी। ✗

15. विलोम शब्द लिखिए।

- प्रेम - नफ़रत
- हिंसा - अहिंसा
- जीवन - मरण